हस्तक्षेप

राष्ट्रीय सहारा

शनिवार ● 8 जनवरी ● 2011

देश के युवा
मर्ज पता न दवा

दुनिया के विकसित देशों की तरह भारत भी हर साल 12 जनवरी को युवा दिवस मनाता है। युवकों को भविष्य का कर्णधार कहा जाता है। वे किसी राष्ट्र की असल शक्ति ही नहीं, उसके आधार और समग्र चेतना के संवाहक होते हैं। देश की जनसंख्या में 70 प्रतिशत युवा हैं। बीस सालों से युवकों की स्थिति संभली है लेकिन यह हमारी समग्र समृद्धि और विकास की वजह से है, जिसका लाभ ग्रामीण युवकों को न के बराबर ही मिला। बेहतर जिंदगी वाले युवा वे हैं जिनका सम्बंध सीधे या परोक्ष रूप में शहरों से रहा, या फिर वे-जिनको आगे बढ़ गये अपनों का सहारा मिला। गांवों के अधिसंख्य युवा असीम प्रतिभाओं के बावजूद बदतर जिंदगी जी रहे हैं। मुख्य वजह शिक्षा का तकनीकी होना तथा रोजगार व व्यवसाय का तकनीक और मार्केट में सिमट जाना है। मार्केट का फोकस शहरों पर केंद्रित है और तकनीक गांवों में कम से कम पहुंच पायी है। गांवों का युवा करियर के अवसरों से वंचित हो रहा है। उन्हें पढ़ाई के बेहतर मौके भी नहीं मिल रहे हैं। सभी को नौकरी नहीं मिल सकती, न सभी व्यवसाय कर सकते हैं लेकिन जो बेरोजगार हैं, वे करें क्या? पढ़ने-लिखने के बावजूद ऐसे युवकों के सामने दिशाहीनता की स्थिति है। बीते बीस सालों के आंकड़ों पर गौर करें तो जितने भी अपराध हुए हैं उनमें औसतन 75 फीसद का सम्बंध युवाओं से रहा है। दूसरी ओर युवकों के कल्याण के लिए बनायी जाने वाली योजनाएं कागजों का पुलिंदा और भ्रष्टाचार का जरिया भर बन कर रह गयी हैं। **युवा दिवस** के परिप्रेक्ष्य में देश की असल शक्ति युवाओं के हालात और उनको दिशा की सम्भावनाओं पर विचार के साथ प्रस्तुत है इस बार का **हस्तक्षेप** :

भारत के युवा परिवर्तन व निरंतरता की समवेत चेतना के वाहक हैं

■ संजय कुमार

जब 2009 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी को बड़ी सफलता मिली तो अनेक लोगों को लगा कि यह सब कांग्रेसी नेता राहुल गांधी के प्रयासों से सम्भव हुआ है। कहा गया कि युवा मतदाताओं ने काफी बड़ी संख्या में कांग्रेस को वोट दिया। उस चुनाव के बाद मीडिया में 'यंग वोटर' की धूम मच गई और अनेक लोगों ने नतीजा निकाल लिया कि भारत के युवा 'एक बेहद अहम पॉलिटिकल कांस्टीट्यूएंसी' बन गए हैं।

मुझे लगता है कि यह नतीजा निकालना एक बड़ी हड़बड़ी होगी कि देश के युवा पहले की तुलना में अब ज्यादा राजनीतिक हो गए हैं। दरअसल हुआ यह है कि युवाओं की मनोवृत्तियों, जीवन शैलियों और खान-पान आदि में जो अनेक बदलाव आए हैं, उनकी वजह से बहुत सारे लोग यह यकीन करने लगे हैं कि वैश्वीकरण ने युवाओं में भारी बदलाव ला दिया है। यह बात बड़े महानगरों में रहने वाले युवाओं के संदर्भ में कुछ हद तक सही हो सकती है, मगर इसे छोटे-छोटे कस्बों, नगरों व शहरों में रहने वाले युवाओं पर चस्पां कर देना जायज नहीं है।

हमारे द्वारा कराए गए शोध अध्ययन के नतीजे संकेत करते हैं कि मनोवृत्ति, अभिरुचि और राजनीति में भागीदारी जैसे मामलों में युवाओं में काफी कम बदलाव आया है। भारतीय युवा उतने आधुनिक नहीं हैं जितना कि हम सोच लेते हैं.... वे उतने राजनीतिक भी नहीं हैं जितना हम यकीन कर लेते हैं। आज भी बहुसंख्यक युवाओं पर पारिवारिक मूल्यों का गहरा असर है और वे अपनी सोच में पुरातनवादी हैं।

इस बात का भी कोई प्रमाण नहीं है कि 2009 के लोकसभा चुनाव में युवाओं ने भारी संख्या में मतदान किया। पिछले चुनावों की तरह 2009 के लोकसभा चुनाव में भी राष्ट्रीय स्तर पर युवा मतदान समग्र औसत मतदान से करीब चार फीसद कम रहा। राज्य के स्तरों पर देखें, तो केवल कर्नाटक और केरल ही ऐसे राज्य रहे जहां युवाओं द्वारा मतदान आम औसत मतदान से कुछ ज्यादा रहा। कहने का अभिप्राय यह है कि देश के चुनावों में भागीदारी करने के मुद्दे पर युवाओं के रुझान में न तो कोई खास ढलान है और न ही कोई खास इजाफा।

मेरी समझ में राजनीति ही नहीं बल्कि सामाजिक मूल्यों व विश्वासों के प्रति भी युवाओं में निरंतरता और समनुरूपता का ही रुझान है। हमने अपने सर्वेक्षण में पाया था कि 40 फीसद युवा पुरातनवादी, 36 फीसद प्रगतिशील और 24 फीसद उलझाव भरी मानसिकता रखने वाले हैं। पुरातनवादी सोच ग्रामीण युवाओं में ज्यादा है, वहीं प्रगतिशील रुझान दिल्ली, मुम्बई, बेंगलुरु, हैदराबाद, पुणे और कोलकाता जैसे शहरों में मिलता है। हम इस तथ्य से भी अवगत हुए कि महज एक तिहाई युवा ही अपनी पसंद से शादी करना चाहते हैं। अभी भी दो तिहाई मानते हैं कि उनकी शादी का फैसला करने का हक उनके माता-पिताओं को है। लगभग यही आंकड़े मुहब्बत, मेलजोल व इश्कखोरी के मामले में भी हैं। शहरी जगहों पर काफी लोग अपनी जाति पहचान का विसर्जन करते दीखते हैं, लेकिन जब बात शादी की आती है, तब जाति पहचान सर उठाकर खड़ी हो जाती है। 67 फीसद युवा अपनी ही जाति में शादी करने के विचार का समर्थन करते हैं। अब भी विवाह को एक बेहद महत्वपूर्ण संस्था के रूप में स्वीकार किया जाता है। 53 फीसद युवा महसूस करते हैं कि शादीशुदा होना बहुत महत्वपूर्ण है, 27 फीसद इसे महत्वपूर्ण मानते हैं, 7 फीसद कुछ खास महत्वपूर्ण नहीं और महज 5 फीसद इसे बेकार व बेदाम की चीज मानते हैं। आमतौर पर हम यह भी कहते हैं कि विवाह विच्छेद यानी तलाक की घटनाएं पहले से ही कहीं ज्यादा बढ़ गई हैं, लेकिन यह भी सच है कि 74 फीसद युवाओं के लिए तलाक जैसी चीजें कबूल करने वाली नहीं हैं।

हम अमूमन यह भी कहते हैं कि संयुक्त परिवार व्यवस्था तेजी से चरमरा रही है, मगर अब भी युवाओं पर एक संस्था के रूप में परिवार का खासा मजबूत असर है। हमने सर्वेक्षण के दौरान जिन युवाओं का इंटरव्यू लिया, उनमें 20 फीसद काफी मजबूत अभिभावकीय प्राधिकार के तहत हैं, 32 फीसदी मजबूत प्राधिकार के मातहत, 25 फीसद सामान्य प्राधिकार के अधीन और 23 फीसद सीमित प्राधिकार के साये में। बेटा और बेटी के प्रति मौजूद सोच में भी कोई खास बदलाव नहीं आया है। अब भी परिवार में लड़कों की तुलना में लड़कियों को ज्यादा मजबूत प्राधिकार के मातहत रहना होता है।

इस तथ्य के बावजूद कि प्रवृत्तियों व सामाजिक मूल्यों के मामलों में बहुत कुछ नहीं बदला है, फिर भी शहरों में रहने वाले युवाओं की जीवन शैली में जरूर ही बदलाव आए हैं। गांवों में बदलाव की गति काफी धीमी है। आज यह भी सच है कि युवा टी.वी. देखने, संगीत सुनने और दोस्तों के साथ घूमने पर कहीं ज्यादा वक्त देता है और किताबों को पढ़ने तथा खेलकूद पर कम। 28 फीसद युवा खूबसूरत कपड़े पहनने व सजने-संवरने को काफी जरूरी मानते हैं, वहीं 32 फीसद इसे जरूरी बताते हैं। दिलचस्प यह है कि इस मामले में लड़कियों की तुलना में लड़के ज्यादा सक्रिय है।

भारतीय युवा चिंताओं और आकांक्षाओं की मिश्रित भावनाओं को भी अभिव्यक्त करते हैं। करीब 50 फीसद युवा तीव्र व गम्भीर चिंता की चपेट में है। महज व फीसद युवा ही कम चिंता की गिरफ्त में हैं। उनकी तीव्र चिंता रोजगार की असुरक्षा, दंगे, सामूहिक हिंसा के खतरे, निजी स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याओं, पारिवारिक तनाव, सड़क हादसे व आतंकवादी वारदातों की आशंकाओं तथा विवाह सम्बंधी उद्विग्नताओं की वजहों से है। लगभग 27 फीसद युवा बेरोजगारी व गरीबी को सबसे बड़ी समस्या बताते हैं। 12 फीसद युवा जनसंख्या वृद्धि को सबसे बड़ी समस्या बताते हैं, वहीं भ्रष्टाचार, निरक्षरता और आतंकवाद को सबसे बड़ी समस्या के रूप में देखने वाले युवा क्रमशः 6 फीसद, 4 फीसद और 3 फीसद हैं।

भारतीय युवाओं की यही मानस कथा है। इस कथा का सकारात्मक पहल यह है कि युवा प्रतिकूलताओं से आकुल-व्याकुल नहीं होते... हालांकि उनमें अपने भविष्य की खातिर खासी चिंताएं हैं। उनकी आकांक्षाएं बढ़ रही हैं... हर जगह.... गांव, कस्बों, छोटे शहरों व बड़े शहरों में.... हां, जगह-जगह की चिंताओं की डिग्री में थोड़ा-बहुत अंतर है। आज 84 फीसद युवा आशावादी हैं। महज 3 फीसद ही निराशा की चपेट में हैं। 13 फीसद आशा व निराशा के नैरंतर्य पर जीते हैं।

समग्र तौर पर कहें तो तस्वीर जटिल तो है, मगर कुहासे और कोहरों से भरी हुई नहीं हैं। देश में युवा एक प्रबल ताकत हैं। वे परिवर्तन और निरंतरता, आधुनिकता और परम्परा तथा चिंताओं व आकांक्षाओं की समवेत चेतना के वाहक हैं। आज जरूरत इस युवा ऊर्जा को थामने और उसे रचनात्मक व विकासपरक कार्यों की दिशा में परिचालित करने की है।

(लेखक 'सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ डेवलपिंग सोसायटीज' में फेलो हैं। भारतीय युवाओं से सम्बंधित किये गये अध्ययन के वह मुख्य इंवेस्टिगेटर थे। इस सर्वेक्षण का नमूना आकार 5000 व्यक्तियों पर आधारित था। आलेख में इस अध्ययन से प्राप्त आंकड़ों का इस्तेमाल किया गया है।)

■

लोकसभा चुनाव-1996-2009

	1996	1998	1999	2004	2009
युवा भागीदारी (18-25 वर्ष)	54	60	57	55	54
कुल मतदान	58	62	60	58	58

आंकड़े प्रतिशत में — स्रोत : एनईएस

देश की सबसे बड़ी पंचायत में युवाओं की दिलचस्पी का आईना

लोकसभा चुनाव-2009

राज्य	कुल मतदान प्रतिशत	युवाओं की भागीदारी (18 से 25 वर्ष)
सम्पूर्ण भारत	58.42	54
आंध्र प्रदेश	72.61	71
असम	69.50	67
बिहार	44.45	36
छत्तीसगढ़	55.29	53
दिल्ली	51.84	52
गुजरात	47.84	44
हरियाणा	67.41	58
झारखंड	51.16	50
कर्नाटक	63.32	73
केरल	73.33	75
मध्य प्रदेश	51.16	53
महाराष्ट्र	50.72	47
उड़ीसा	65.29	51
पंजाब	69.75	59
राजस्थान	48.49	45
तमिलनाडु	72.99	67
उत्तर प्रदेश	47.75	45
उत्तरांचल	53.21	44
पश्चिम बंगाल	81.74	76

(स्रोत : राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन(एनईएस) 2009/सभी आंकड़े प्रतिशत में

ज्यादातर युवक रूढ़िवादी

रूढ़िवादी	40%
प्रगतिशील	36%
अनिश्चित	24%

भारी हैं सामाजिक मूल्य

	पक्ष	विरोध में
अंतरजातीय विवाह	29%	67%
अभिभावकों की पसंद से विवाह	65%	32%
विवाह पूर्व मेलजोल	63%	32%
मतभेद की स्थिति में तलाक लेना उचित	18%	74%

अभिभावकों का प्रभाव बरकरार

प्रभाव की प्रकृति	आंकड़े
बहुत ज्यादा प्रभावी	20%
मजबूत प्रभाव	25%
नियंत्रित प्रभाव	32%
सीमित प्रभाव	23%

अधिकतर भारतीय युवा चिंता का शिकार

चिंता का स्तर	आंकड़े
बहुत अधिक	50%
अधिक	18%
कम	23%
बेहद कम	09%

भविष्य को लेकर बेहतर उम्मीदें

चिंता का स्तर	आंकड़े
बहुत अधिक	24%
अधिक	29%
सामान्य	19%
कम	21%
बेहद कम	07%